इकाई 5

हरित कौशल

परिचय

हमारे आसपास का वातावरण हमारे जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है और हमारे दिन–प्रतिदिन के सभी कार्यकलाप भी पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। जो व्यक्ति शहरों में रहते हैं, उनके लिए भोजन की आपूर्ति उनके आसपास के गांवों से होती हैं और वे जल, ईंधन की लकड़ी, चारा आदि जैसे संसाधनों के लिए वनों, घास के मैदानों, नदियों, समुद्र तटों पर अप्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं। हम खाद्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं। हमारे आसपास जो कुछ भी है हमारा पर्यावरण है तथा हमारा जीवन हमारे आसपास के प्राकृतिक विश्व पर निर्भर करता है।

हाल के वर्षों में, आर्थिक विकास के साथ ही पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हुई है। जैसे, कृषि के उच्च आदानों के अविष्कार से हम उर्वरकों और कीटनाशकों और संकर फसलों का उपयोग करके खाद्यान्नों की अधिक उपज प्राप्त कर सकते हैं। किन्तु इससे मिट्टी और पर्यावरण में गिरावट आई है। हमें स्थायी रूप से संसाधनों के उपयोग की योजना बनाने की जरूरत है ताकि हम और हमारी आने वाली पीढ़ियां अच्छे पर्यावरण का आनंद ले सकें।

सत्र 1 : स्थायी विकास (**Sustainable Development**)

क्या हम अधिक पेड़ लगा रहे हैं या हम केवल अपने उपयोग के लिए उन्हें नष्ट कर रहे हैं? क्या हम जल संसाधनों को बचा रहे हैं या सिर्फ कचरे से उन्हें प्रदूषित कर रहे हैं? क्या हम स्वच्छ ऊर्जा का उपयोग कर रहे हैं या हम लकड़ी और पेट्रोल जला रहे हैं और प्रदूषण को बढ़ा रहे हैं? हम प्रकृति को क्या वापस दे रहे हैं ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां रोमांचित हो सकें या क्या हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ भी छोड़े बिना

उपलब्ध वायु, जल और मिट्टी का उपयोग कर रहे हैं? यदि इन सभी सवालों का उत्तर हां है, तो हम केवल अपने तत्काल विकास के बारे में सोच रहे हैं, न कि दीर्घकालिक विकास के बारे में।

स्थायी विकास क्या है?

स्थायी विकास वह विकास है जो भावी पीढ़ियों की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है, आर्थिक विकास के बीच संतुलन की गारंटी देता है, पर्यावरण और सामाजिक कल्याण का ध्यान रखता है।

स्थायी विकास का महत्व (**Importance of Sustainable Development**)

आर्थिक विकास विश्व के संसाधनों का इतनी तेजी से उपयोग कर रहा हैं कि हमारी भावी पीढ़ियों, विश्व के युवाओं को गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं, जिनका हम वर्तमान में सामना कर रहे हैं, इनसे कहीं अधिक गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। बढ़ती जनसंख्या और आय में वृद्धि के साथ ही वस्तुओं की खपत दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। इसके कारण उत्पादन और माल के उत्पादन के लिए आवश्यक प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में वृद्धि हुई है। समाज को अपने अस्थायी विकास की कार्यनीति को इस प्रकार नए रूप में बदलना होगा जिसमें विकास पर्यावरण का विनाश नहीं करेगा। स्थायी विकास का यह रूप तभी लाया जा सकता है, जब प्रत्येक व्यक्ति दीर्घकालिक जीवनशैली को अपनाएं। चूंकि अधिकांश प्राकृतिक संसाधन दुर्लभ हैं इसलिए संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है।

स्थायी विकास को 'वह विकास जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढी की आवश्यकताओं को पूरा करता है' के रूप में परिभाषित किया जाता है (पर्यावरण और विकास के संबंध में विश्व आयोग, 1987)। जैसे, स्थायी कृषि में ऐसी पर्यावरण अनुकूल पद्धतियां शामिल हैं, जो मानव या प्राकृतिक प्रणाली को नुकसान पहुंचाए बिना कृषि फसलों या पशुओं के उत्पादन को संभव बनाती हैं। इसमें रसायनों के उपयोग को रोकना भी शामिल है ताकि मिट्टी, जल और जैव–विविधता को प्रतिकूल प्रभावों से बचाया जा सके।

स्थायी विकास से संबंधित समस्याएं (**Problems Related to Sustainable Development**)

स्थायी विकास से जुड़ी तीन प्रमुख समस्याएं हैं :

(क) **खाद्य** : फसल उगाने के लिए आवश्यक समृद्ध, उपजाऊ भूमि की मात्रा, जैसे कि गेहूं, चावल, आदि कम होती जा रही है क्योंकि हम अन्य उद्देश्यों के लिए अधिक से अधिक भूमि का उपयोग कर रहे हैं। मिट्टी के पोषक तत्व भी कम हो रहे हैं और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से बहुत सारे रसायन मिट्टी को खराब कर रहे हैं।

(ख) **जल** : हम पीने और सफाई के लिए नदियों तथा तालाबों के ताजा पानी का उपयोग करते हैं लेकिन उनमें कचरा का ढेर करते हैं। नदी और तालाब प्रदूषित हो रहे हैं। इस तरह कई वर्षों के बाद, हमारे पास अपने उपयोग के लिए साफ पानी नहीं होगा।

(ग) **ईंधन** : हम पेड़ों से ईंधन के रूप में और घरों तथा फर्नीचर के निर्माण के लिए लकड़ी का उपयोग कर रहे हैं। जैसे–जैसे अधिक से अधिक पेड़ काटे जा रहे हैं, यह जगह की जलवायु को प्रभावित कर रहा है। चरम मौसम की स्थिति, जैसे बाढ़, अत्यधिक ठंड या गर्मी, कई स्थानों पर देखी जाती हैं, जो वहां रहने वाले लोगों को प्रभावित करती हैं।

बिजली के उत्पादन के लिए एक पर्यावरण अनुकूल तरीका सूर्य से सौर ऊर्जा या ऊर्जा का उपयोग करना है जो असीमित है। सौर ऊर्जा के बड़े पैमाने पर उत्पादन का एक प्रमुख उदाहरण चरनका – गुजरात सोलर पार्क में देखा जाता है। जंगली वनस्पति वाली इस बंजर भूमि में 600 मेगावॉट का एक मेगा सौर ऊर्जा संयंत्र है। इससे गुजरात में गैर–नवीकरणीय जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो गई है। चरनका के लोगों को लाभ हुआ है क्योंकि उनके पास आय का एक अच्छा स्रोत है और इससे आने वाली पीढ़ियों को भी अगले 40–50 वर्षों में स्थायी विकास में मदद मिलेगी।

- संसाधनों के बहुत अधिक उपयोग में कमी लाना और संसाधनों का संरक्षण बढ़ाना।
- अपशिष्ट सामग्री की रिसाइकलिंग और दोबारा उपयोग करना।
- नवीकरणीय संसाधनों का वैज्ञानिक तरीके से प्रबंधन करना, खास तौर पर जैव संसाधन।
- अधिक से अधिक पेड़ लगाना।
- कंक्रीट की इमारतों के बीच घास के हरे हिस्से तैयार करना।
- अधिक पर्यावरण अनुकूल सामग्री या बायो डीग्रेडेबल सामग्री का उपयोग करना।
- ऐसी प्रौद्योगिकियों का उपयोग करना जो पर्यावरण अनुकूल हैं और जिनमें संसाधनों का उपयोग दक्षतापूर्वक किया जाता है।

स्थायी विकास के लक्ष्य (**Sustainable Development Goals**)

स्थायी विकास लक्ष्य (एसडीजी), जो वैश्विक लक्ष्यों के रूप में भी जाने जाते हैं, गरीबी समाप्त करने, इस ग्रह की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के लिए एक सार्वभौमिक आह्वान है, ताकि सभी व्यक्ति शांति और समृद्धि का आनंद उठाएं। सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) सितंबर, 2015 में न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र स्थायी विकास शिखर सम्मेलन में शुरू किए गए थे, जिसमें सतत विकास के लिए वर्ष 2030 के संबंध में कार्यसूची तैयार की गई है। इसने लक्ष्य निर्धारित किए हैं कि देशों को 2030 तक काम करना चाहिए और इन्हें प्राप्त करना चाहिए।

17 एसडीजी को व्यवसायों, सरकारों और समाज के सामने आ रहे महत्वपूर्ण मुद्दों की सामने लाने के लक्ष्य से तैयार किया गया है। इनमें से कुछ मुद्दे जैसे गरीबी, जेंडर की समानता, जल उपयोग, ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता हैं। देश अब ऐसी नीतियां और विनियम स्थापित कर रहे हैं जो सुरक्षित, वहनीय और स्थायी अर्थव्यवस्था प्रदान करने के लिए सभी आर्थिक क्षेत्रों में आवश्यक स्थायी प्रणालियों को बढ़ावा देंगी।

चित्र 5.1 स्थायी विकास के लक्ष्य

एक व्यक्ति के लिए आवश्यक समझे गए मुख्य कौशलों में पर्यावरण जागरूकता और स्थायी विकास के संबंध में जानने की इच्छा की क्षमता शामिल है। यदि हम अपने जीवन के बारे में ज़िम्मेदार हैं तो हम अपने घर, स्कूल में और अपने कार्यस्थल पर अपने आसपास के वातावरण और लोगों की मदद करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे।

स्थायी विकास की पहल (**Sustainable Development Initiatives**)

जब मंगलौर के नगर निगम द्वारा प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया था तो एक अविष्कारक और उद्यमी श्री अवस्थ हेगड़े ने एक पर्यावरण–अनुकूल विकल्प बनाया। उन्होंने 100 प्रतिशत बायो–डिग्रेडेबल बैग बनाया, जो गर्म पानी में घुल सकता है और प्राकृतिक वातावरण में सड़ सकता है। यह अब कई देशों में इस्तेमाल किया जा रहा है और इससे पर्यावरण को सुरक्षित रखने में मदद की जाएगी।

एक अन्य नवीन विचार यह था कि प्लास्टिक के चम्मच, कांटे आदि का उपयोग बंद कर दिया जाए। नारायण पिसापाटी ने एक अनाज से बनी खाद्य कटलरी बनाई – इन चम्मचों को खाया जा सकता है और यदि वे नहीं भी खाए जाते हैं तो भी वे आसानी से मिट्टी को समृद्ध करते हुए सड़ कर नष्ट जाएंगे। <https://www.ibef.org/Innovations-from-India.aspx>

स्थायी प्रक्रियाएं (**Sustainable Processes**)

पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद करने के लिए कुछ प्रथाओं, जैसे कि जैविक खेती, वर्मी–कम्पोस्ट और वर्षा जल संचयन (rainwater harvesting) का उपयोग किया जा रहा है।

जैविक खेती वह तरीका है जहां किसान अपने उत्पादन को बढ़ाने के लिए रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों का उपयोग नहीं करते हैं। वे बढ़ती फसलों में मदद करने हेतु गोबर जैसे जैविक और प्राकृतिक उर्वरकों का उपयोग करते हैं। यह बेहतर गुणवत्ता वाले रासायनिक मुक्त फसलों में मदद करता है, वहीं भविष्य में उपयोग के लिए मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखता है। यह स्थायी विकास का एक सच्चा उदाहरण है जहाँ हम न केवल पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं बल्कि अपनी भावी पीढ़ियों के लिए भी इसका संरक्षण कर रहे हैं।

प्रायोगिक अभ्यास

गतिविधि 1

स्कूल में एक गार्डन बनाएँ या पौधों को लगाएं

आवश्यक सामग्रियां

बीज, उद्यान अपशिष्ट, स्प्रिंकलर, बागवानी टूल्स

प्रक्रिया

- उपलब्ध छात्रों की संख्या के आधार पर समूह बनाएं। अध्यापक से स्कूल परिसर में जमीन का एक टुकड़ा आबंटित करने के लिए कहें।
- छात्रों के विभिन्न समूहों को अलग–अलग कार्य सौंपें।
- पौधों को बोने, बीज बोने, वर्मीकम्पोस्टिंग का उपयोग करते हुए खाद बनाने और पौधों को पानी देने के लिए स्प्रिकलर सिस्टम स्थापित किया जा सकता है।

गतिविधि 2

अपव्यय को कैसे रोका जाए, इस पर चर्चा करें।

प्रक्रिया

- उपलब्ध छात्रों की संख्या के आधार पर समूह बनाएं।
- समूह के प्रत्येक छात्र एक ऐसा तरीका बताएगा जिससे पानी और भोजन की बर्बादी को रोका जा सकता है या रोका जा सकता है।
- एक सूची बनाएं और कक्षा के बाकी छात्रों के साथ साझा करें।

अपनी प्रगति जांचें

क. बहु विकल्प प्रश्न

प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें और उस अक्षर (क), (ख), (ग) या (घ) पर गोला लगाएं जो प्रश्न का सबसे सही उत्तर है।

1. संयुक्त राष्ट्र द्वारा कितने स्थायी विकास लक्ष्य दिए गए हैं?

   (क) 18

   (ख) 17

   (ग) 15

   (घ) 20

2. विकल्प चुनें जो स्थायी विकास को परिभाषित करता है।

   (क) भावी पीढ़ियों की देखभाल करना

   (ख) केवल स्वयं की देखभाल करना

   (ग) अपनी और आने वाली पीढ़ियों की देखभाल करना

   (घ) सभी का कल्याण

3. किस संगठन ने स्थायी विकास लक्ष्य बनाए हैं।

   (क) संयुक्त राष्ट्र

   (ख) राष्ट्र संघ

   (ग) यूनिसेफ

   (घ) विश्व स्वास्थ्य संगठन

ख. विषय संबंधी प्रश्न

1. स्थायी विकास का अर्थ क्या है?

2- आपको क्या लगता है कि संयुक्त राष्ट्र ने 17 स्थायी विकास लक्ष्य क्यों बनाए हैं?

आपने क्या सीखा?

इस सत्र के पूरा होने के बाद, आप यह करने में सक्षम होंगे

- स्थायी विकास को परिभाषित करना।
- स्थायी विकास के लक्ष्यों की पहचान करना।

सत्र 2 : स्थायी विकास में हमारी भूमिका (Our Role in Sustainable Development)

बढ़ती जनसंख्या और विकास के कारण प्राकृतिक संसाधनों की खपत में वृद्धि हुई है। जितनी अधिक जनसंख्या, उतना ही अधिक भोजन, ऊर्जा और पानी की हमें जरूरत है। जब हम अधिक फसलें उगाते हैं, तो मिट्टी के पोषक तत्वों की खपत होती है और धीरे–धीरे मिट्टी बेकार हो जाती है। इसी तरह हम कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन का उपयोग करना जारी रखते हैं, बहुत जल्द हमारे पास इन प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो जाएगी और वे समाप्त हो जाएंगे।

हम प्रकृति से बहुत सारे संसाधनों का उपयोग करते हैं लेकिन हम प्रकृति को वापस क्या देते हैं? फैक्टरियों से धुआं निकलता है जो हवा को प्रदूषित करता है। घरों से इकट्ठा किया गया कचरा लैंडफिल में फेंक दिया जाता है। अनुपचारित कचरा बीमारी और अस्वास्थ्यकर वातावरण का कारण बन सकता है। शहरों से निकलने वाले सीवेज को समुद्र तथा झीलों में फेंक दिया जाता है इससे जलीय जीवन के लिए यह असुरक्षित बन जाता है। इससे पता चलता है कि यद्यपि हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, हम प्रकृति में वापस लौटने या देने के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। प्राकृतिक संसाधन सीमित हैं और समय के साथ वे खत्म हो जाएंगे और यदि हम इसके बारे में कुछ नहीं करते हैं, तो हमारी आने वाली पीढ़ियां जीवित नहीं रह पाएंगी।

वाराणसी और रायबरेली में रेल मंत्रालय द्वारा एक पहल की गई थी जहाँ उन्होंने प्लास्टिक और कागज के कपों को हटाने तथा परंपरागत स्वाद को वापस लाने के लिए मिट्टी के बर्तन 'कुल्हड़' की शुरुआत की। 'कुल्हड़' का उपयोग करते हुए प्राप्त तीन प्रमुख लाभ हैं +

1. पेपर कप बनाने के लिए पेड़ की कटाई कम करना।

2. कुम्हारों के लिए रोजगार सृजन, जो अर्थव्यवस्था में योगदान देता है।

3. प्लास्टिक कचरे को कम करना।

स्थायी विकास की दिशा में हमारी भूमिका (Our Role towards Sustainable Development)

संयुक्त राष्ट्र ने 17 सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का गठन किया है ताकि देश और राष्ट्र दुनिया में बढ़ती समस्याओं का हल खोजने की दिशा में काम कर सकें। देशों को गरीबी और भुखमरी को दूर करने तथा अच्छे स्वास्थ्य और गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने हेतु नियम और दिशानिर्देश बनाने चाहिए। ये लक्ष्य इसलिए बनाए गए हैं ताकि सभी देश हमारी वायु, जल और भूमि को प्रदूषण से बचाने के लिए कार्रवाई करें और सभी लोगों को स्वच्छ जल, वायु और ऊर्जा प्रदान करें।

स्थायी विकास वास्तव में तभी हो सकता है जब हममें से प्रत्येक व्यक्ति इसके प्रति कार्य करे। हमें जिम्मेदार पर्यावरण नागरिक बनना होगा जो अपने प्रयासों से पर्यावरण की रक्षा कर सकें।

यहां कुछ मूल तरीके दिए गए हैं जिनसे लोगों को स्थायी विकास लक्ष्यों की ओर मदद की जा सकती है।

गुणवत्ता शिक्षा (Quality Education)

स्थायी विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण कारक है। जो बच्चे स्कूल गए हैं वे नौकरी कर सकेंगे ताकि वे अपना और अपने परिवार का पेट पाल सकें। शिक्षा हमें एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमारी भूमिका से अवगत होने में मदद करती है। हमें करना चाहिए

1. हमारे क्षेत्रों में मौजूद सुविधाओं का उपयोग करें।
2. हमारे दोस्तों को स्कूल ले जाएं।
3. दोस्तों की पढ़ाई में मदद करें।
4. दोस्तों को स्कूल छोड़ने से रोकें।

स्वच्छ जल और स्वच्छता (Clean Water and Sanitatio)

हमें शौचालय निर्माण और स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करके भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। औद्योगिक प्रदूषण हमारे जल संसाधनों को प्रदूषित कर रहा है, जो निकट भविष्य में स्वच्छ पेय और उपयोगी जल की कमी का कारण बन जाएगा। हमें जल स्रोतों को स्वच्छ रखने के लिए जागरूकता को बढ़ावा देकर मापने योग्य कदम उठाने चाहिए।

सस्ती और स्वच्छ ऊर्जा (Affordable and Clean Energy)

सौर ऊर्जा यानी सूर्य के इस्तेमाल से पैदा होने वाली बिजली से प्रदूषण नहीं होता है क्योंकि उसे कोयला जैसे गैर–नवीकरणीय ईंधन को जलाने की आवश्यकता नहीं होती है। हम सौर ऊर्जा उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहे हैं ताकि हमारी बिजली की जरूरतें पूरी हों तथा साथ ही हम पर्यावरण को प्रदूषित न करें या

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग न करें। बायोगैस का उपयोग प्राकृतिक गैस के लिए एक पर्यावरण के अनुकूल विकल्प भी है।

निर्णय कार्य और आर्थिक विकास (Decent Work and Economic Growth)

हम कर सकते हैं

(कं) अपना और अपने परिवार का ख्याल रखने हेतु अच्छी पढ़ाई करें और अच्छी नौकरी पाएँ।

(ख) कड़ी मेहनत करें और समाज में योगदान दें।

(ग) कौशल सीखें तथा विकसित करें ताकि हमें अपने समुदाय में मूल्य मिलें।

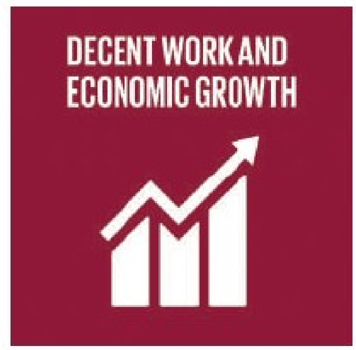

असमानताओं में कमी (Reduced Inequalities)

असमानताओं को कम करने के लिए हम कर सकते हैं

1. एक दूसरे के मददगार बनें।
2. सभी के साथ दोस्ताना व्यवहार करें।
3. काम करते या खेलते समय सभी को शामिल करें।
4. सभी को शामिल करके दूसरों की मदद करें चाहे वे छोटे हों या बड़े, लड़की हो या लड़का, किसी भी वर्ग या जाति के हों।

स्थायी शहर और समुदाय (Sustainable Cities and Communities)

स्थायी शहरी बनाना

1. उपयोग में न होने पर लाइट और पंखे बंद करके ऊर्जा बचाएं।
2. जितना संभव हो प्राकृतिक रोशनी का उपयोग करें।
3. ऊर्जा दक्ष रोशनी (एलईडी बल्ब) और उपकरणों का उपयोग करें।

जिम्मेदार उपभोक्ता और निर्माता (Responsible Consumers and Producers)

हम अपने स्वयं के पर्यावरण के बारे में जिम्मेदार बन सकते हैं

1. पुनः उपयोग कागज, कांच, प्लास्टिक, पानी, आदि

2. फलों और सब्जियों को ले जाने के लिए कपड़े के थैले ले जाना।
3. उन चीजों का दान करें जिनका हम उपयोग नहीं करते हैं जैसे कपड़े, किताबें, फर्नीचर, भोजन, आदि।
4. स्थानीय उत्पादकों से मौसमी फल और सब्जियां खरीदें और खाएं।
5. पानी की बर्बादी से बचने के लिए लीक होने वाले नलों और पाइप की मरम्मत करें।
6. निपटाने से पहले कचरे को छांट लें और उसका उपचार करें।

जल के नीचे जीवन की रक्षा करें (Protect Life Below Water)

समुद्र में कई टन प्लास्टिक के टुकड़े पाए जाते हैं, जो समुद्री जीवन को मार रहे हैं। समुद्री जीवन की रक्षा करना, हमारे महासागरों को प्रदूषण से बचाना आवश्यक है ताकि समुद्री जीवन को बचाया जा सके।

भूमि पर जीवन की रक्षा करें (Protect Life on Land)

पेड़ों की कटाई से मिट्टी का कटाव होता है और खेती के लिए भूमि सूखी और बेकार हो जाती है। हमारे द्वारा काटे गए पौधों को बदलने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाना स्थायी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रायोगिक अभ्यास

गतिविधि 1

एक समूह में चर्चा

प्रक्रिया

- उपलब्ध छात्रों की संख्या के आधार पर समूह बनाएं।
- प्रत्येक छात्र एक तरीके का वर्णन करेगा जिसमें वे पर्यावरण के संरक्षण और सुरक्षा के लिए काम कर सकते हैं।
- एक सूची बनाएं और इसे बाकी कक्षा के साथ साझा करें।

गतिविधि 2

कचरे का उपयोग करके कला परियोजना बनाएं

आवश्यक सामग्रियां
प्लास्टिक की थैलियां, इस्तेमाल की हुई बोतलें, कागज के कप, कागज, तार आदि।

प्रक्रिया

- उपलब्ध बच्चों की संख्या के आधार पर समूह बनाएं। अपशिष्ट पदार्थ की एक सूची बनाएं जिसे फेंक दिया जाता है। अब रचनात्मक विचारों के बारे में सोचें, जिसमें आप कुछ उपयोगी बनाने के लिए बेकार सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

यदि समय अनुमति देता है, तो प्रत्येक छात्र घर से कुछ अपशिष्ट पदार्थ प्राप्त कर सकता है, जैसे कि पुराने समाचार पत्र, प्लास्टिक की बोतलें, पुराने कपड़े, आदि, और कचरे से सबसे अच्छा बना सकते हैं (एक पेंटिंग, दीवार की सजावट या एक बैग)। अपने स्कूल के सामने वाले गेट पर एक प्रदर्शनी लगाइए।

अपनी प्रगति जांचें

क. बहु विकल्प प्रश्न

प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें और उस अक्षर (क), (ख), (ग) या (घ) पर गोला लगाएं जो प्रश्न का सबसे सही उत्तर है।

1. ऊर्जा का निम्नलिखित में से कौन सा स्रोत अक्षय स्रोत है?

   (क) सौर ऊर्जा

(ख) लकड़ी
(ग) कोयले
(घ) पेट्रोल

2. वह विकल्प चुनें जो संयुक्त राष्ट्र के अनुसार एक स्थायी विकास लक्ष्य नहीं है।

(क) स्वच्छ जल और स्वच्छता
(ख) लैंगिक समानता
(ग) जनसंख्या
(घ) घटती असमानताएं

ख. विषय संबंधी प्रश्न

1. कुछ ऐसे तरीकों की सूची तैयार करें जिनमें हम संसाधनों का उपयोग समझदारी से कर सकें।
2. स्थायी विकास की दिशा में शिक्षा के महत्व को समझाएं।

आपने क्या सीखा?

इस सत्र के पूरा होने के बाद, आप यह करने में सक्षम होंगे

- स्थायी विकास में हमारी भूमिका के महत्व को समझाएं।
- पहचान करें कि हम स्थायी विकास की दिशा में कैसे योगदान कर सकते हैं।